ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

अभिव्यक्ति की आजादी और राश्ट्रवाद

KEY WORDS: .

Dr. Shivali Agrawal एसो0 प्रोफे0, राजनीति विज्ञान विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पीजी कालिज, मेरठ

माना जाता है कि भारत 2020 में दुनिया के सबसे अधिक युवाओं वाला देश होगा। मगर युवा के जोश और होश के अनुसार राजनीतिक सियासत के कराने से नये नये विमर्श के बिन्दु सामने आ रहे हैं।

''बोल कि लब आजाद हैं तेरे
बोल जुबां अब तक तेरी है''

ये वो नारे है जो अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर JNU के पत्थरों पर लिखे देखे जा सकते हैं। पिछले दो सालों में अभिव्यक्ति की आजादी, राष्ट्रवाद, वामपंथी विचारधारा, सेक्यूलजियम देशद्रोह के मिश्रण से उपजे वातावरण के कारण राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का गढ़ बन गये हैं। शिक्षा के मंदिर में बोलने की आजादी के नाम पर राजनीति बढ़ती जा रही है। जितनी बोलने की आजादी और राष्ट्रवाद पर सालों में जिनती बहस, चर्चाये, भड़काऊ भाषण व मानसिक कसरतें हुयी हैं। उससे आप भली–भांति परीचित होगें।

असहमति के अधिकार और बोलने की स्वतन्त्रता के नाम पर JNU में जो नारे लगाये गये वो भी टी0वी0 चैनलों पर गूंजते रहे। अफजल तेरे खून से इंकलाब आयेगा, भारत तेरे टुकड़े होगें, इंशाल्लाह इंशाल्लाह, अफजल हम शर्मिन्दा है, तेरे कातिल जिंदा हैं आदि आदि.....।

अभिव्यक्ति की आजादी का महिमामण्डन इस तरह से किया गया है कि आप कुछ भी कहने के लिए स्वतन्त्र है और यदि आपको राष्ट्र विरोधी आवाज उठाने के लिये रोका जायेगा, तो सारे तथाकथित सेक्यूलर बुद्धिजीवी, साहित्यकार, वामपंथी, उदारवादी, मार्क्सवादी विद्वान असहमति के अधिकार की पैरवी करते हुये सरकार पर फासिस्टवादी, दक्षिणपथी राष्ट्रवादी आक्रान्ता और तानाशाही सरकार होने का आरोप लगा देगे।लेकिन यही सब लोग चुप रह जाते हैं जब श्रीनगर में NIT के विद्यार्थी, भारत मां की जय के नारे लगाते हैं और तिरंगा फहराते हैं और उनकी पिटाई की जाती है। कालिज में बंद किये जाते है तो ये वामपंथी अपने अपने दड़बों में बंद हो जाते हैं। क्या विचारधारा के प्रति इतना मोह होना चाहिये कि अपनी पार्टी या संगठन के सदस्य आतंकी गुटों या राष्ट्रविरोधी तत्वों के सर्मथन में जाये, फिर भी हम उनका सर्मथन करेगें।

अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर यदि जे एन यू में बीते सालों की गतिविधीयों पर नजर डाले तो पता चलता है कि

- 2010 में दंतवाड़ा में नक्सली हमले में शहीद 75 जवानों की मौत पर जब देश आंसू बहा रहा था तक जे एन यू परिसर में विजय दिवस मनाया जा रहा था।
- जे एन यू में दुर्गा पूजा की जगह महिषासुर दिवस मनाया जाता है तथा अब तक बीफ फेस्टीवल का भी आयोजन होता था।
- जे एन यू में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिये भारत सरकार औसतन सालाना 244 करोड़ का अनुदान देती है। प्रति छात्र पर तीन लाख रूपये का खर्च आता है और यहां के छात्र देश के दुशमन अफजल गुरू की तीसरी बरसी मना रहे थे और उसे शहीद का दर्जा दे रहे थे। और तथाकथित वामपंथी बुद्धिजीवी राष्ट्र की एकता अखंडता को तोड़ने का प्रयास करने वालो के पक्ष में खड़े अतार्किक बहस में उलझे दिखाई दिये।

कौन नहीं जानता के वामपंथी शब्दावली के खेल में बहुत तेज हैं। खुद को प्रगतिशील, वचिंतों के संरक्षणदाता बताते हैं और जो गैरवामपंथी है वो सब दक्षिणपंथी, पुरातनपंथी, कटटरपंथी आदि ही हैं। यह विचारधारा संघर्ष की विचारधारा है। मार्क्सवाद, लेनिन, स्टालिन माओ, खुश्चेव उदार मार्क्सवाद, नववामपंथी आदि से होते हुये ये आपसी झगड़े में थे, कि कौन सी विचारधारा श्रेष्ठ है। परन्तु भारत में यह झगड़ा वामपंथ बनाम राष्ट्रवाद में बदल गया। अब एक ही लक्ष्य है भारतीय राष्ट्र राज्य और हिन्दु धर्म का विरोध। जे एन यू वामपंथ का गढ़ है। वहां एक विचारधारा के शिक्षक छात्रों को पढ़ाते है कि भारत एक राष्ट्र नहीं बल्कि बहुत सारी राष्ट्रीयता का समूह मात्र है। JNU में 8500 छात्र, 1500 कर्मचारी और 650 प्रोफेसर के होते हुये राष्ट्र विरोधी पोस्टर लगाना, सभायें होना और 200–250 की भीड़ ने भारत तेरे टुकड़े होगें, इंशाल्लाह के नारे ने पूरे देश को हिला दिया। देश के चैनल राष्ट्रवादी और वामपंथी, छदम सेक्यूलरवादियों में बँट गये और आम आदमी स्वयं को हताशा में महसूस कर रहा था कि हमारी युवा पीढ़ी आखिर किस दिशा में जा रही है।

जे एन यू के शिक्षक अपने छात्र नेता कन्हैया के पक्ष में खड़े सरकार पर आरोप लगाते हैं राष्ट्रवाद की वामपंथी परिभाषायें देते हैं और निवेदिता मेनन, प्रकाश करात जो छात्रसंघ के प्रथम अध्यक्ष थे वह आरोप लगाते हैं कि मोदी वैचारिक वर्चस्व, विश्वविद्यालयों पर थोपना चाहते थे। परन्तु ये वैचारिक वर्चस्व की लड़ाई ही नहीं है। ये तो राष्ट्रविरोधी ताकतों का राष्ट्र के खिलाफ प्रदर्शन मात्र था जिसका विरोध सरकार को करना स्वाभाविक था। व्रदां ग्रोवर कहती हैं कि नागरिकों के विरोध करने का हक छीना जा रहा है।[1]

विश्वविद्यालय के छात्रसंघ और शिक्षक संघ ने रवीन्द्रनाथ के शब्दों में कहे तो संकीर्ण अपनी दीवारों से अपनी आजादी का ऐलान कर दिया था। परम्परागत रूप से वामपंथियों, उदारवाद और यहां तक कि कुछ क्रान्तिकारी वामपंथियों के वर्चस्व में जे एन यू के छात्रों ने राष्ट्रवाद की अवधारणा पर व्याख्यानों और प्रश्नसत्रो की भी खुली चर्चा की।[2]

अभिव्यक्ति की आड़ में आखिर कब तक भारत अपने भीतर ही राष्ट्रविरोधी ताकतों से मात खाता रहेगा।

- कभी असीम त्रिवेदी राष्ट्र प्रतीक चिन्हों का प्रयोगकर राष्ट्र विरोध का काम करते हैं।[3]
- कभी वंदेमातरम का विरोध।
- कभी भारतमाता को डायन कह देना।
- कभी इरफान हबीब का RSS की तुलना IS से कर देना।

सविंधान द्वारा प्रदत्त अनु 19 (1) ऐ में अभिव्यक्ति की आजादी पर एक सीमा के तौर पर धारा 124 ए भी है जिसमें राजद्रोह से संबंधित कुछ धारायें भी है।

सुप्रीम कोर्ट के शब्दों में ''यह अदालत नागरिकों के मुलभूत अधिकारों की रक्षक व उनके प्रति जिम्मेदार है और इसे अधिकार है कि वह ऐसे किसी भी कानून पर रोक लगाये जो अभिव्यक्ति की आजादी में रूकावट बनवा दें लेकिन इस आजादी की विधि द्वारा स्थापित सरकार को ऐसे शब्दों से बदनामी और उसे कलंकित करने का लाइसेंस बनने से रक्षा करनी होगी। अभिव्यक्ति के उन्मुक्त अधिकार और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन बहुत जरूरी है।

सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रद्रोह को परिभाषित करते हुये इंग्लैंड के कानून पर स्टीफन की टिप्पणी को उदघ्रत किया था ''हम ऐसे व्यवहार को लेकर चिन्तित है जो एक ओर देशद्रोह से कुछ ही कम है और दूसरी ओर उसमें हिंसा या ताकत का इस्तेमाल है..... राजद्रोह शब्दों में कृत्यों के लेखन के द्वारा भी किया जा सकता है।''

परन्तु राजद्रोह पर भी बुद्धिजीवियों की उच्चतम न्यायालय से इतर परिभाषायें हैं क्योंकि उनकी राष्ट्रवाद की परिभाषा भी स्वयं की विचारधारा से ही निकली है। दुख की बात यह है कि भारत के कुछ बुद्धिजीवी राष्ट्रवाद के विचार की ही खिल्ली उड़ाना प्रगतिशीलता और बुद्धिजीविता की निशानी मान रहे हैं।

देहरादून की एक साहित्य उत्सव की वरिष्ठ लेखिका तारा सहगल ने कहा कि ''राष्ट्रवाद मूर्खता की निशानी है।'' उनका मानना है कि 70 वर्ष से आजाद देश में राष्ट्रवाद का नारा लगाने की आवश्यकता नहीं है। शायद वो उसे अंग्रेजी कहावत को हमारे सामने लाना चाहती है कि शान्तिकाल में राष्ट्र मर जाते हैं और युद्ध काल में राष्ट्र जीवित हो जाता है परन्तु 240 वर्ष से आजाद अमेरिका में आज भी ''अमेरिका फर्स्ट'' वाला नारा गुंजता है। ये भावात्मक मानसिकता है।

राष्ट्रवाद की बात करना उन्मादी होना नहीं है कि हम राष्ट्रवाद को किसी संगठन या दल से जोड़कर देखने लगे और उन्हें निशाना बनाने के लिये देशभक्ति को भी बुरा कहने लगे। राष्ट्रवाद सेक्यूलरजिम, साम्प्रदायिकता, अभिव्यक्ति की आजादी, राममन्दिर, काश्मीर विवाद, नागरिक समानता, तीन तलाक आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हुये ये शातिर सेक्यूलर बुद्धिजीवी इस बात का ध्यान रखते हैं कि एक वर्ग विशेष बुरा ना मान जाये। विरोध के लिये अतार्किक विरोध करना ही इनका एक मात्र उददेश्य होता है।

इसी तरह की बात वामपंथी इतिहासकार डा0 रेमिला थापर कहती है। उनके अनुसार राष्ट्रवाद की दो श्रेणियां होती है–1 एक सही 2 दूसरी गलत

सही	गलत
धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद	हिन्दूत्व राष्ट्रवाद

वामपंथियों की अगुआ और अंग्रेजो के इतिहास की पैरवी करने वाले नववामवादी, बौद्धिकों के सिद्धान्तों की आड़ लेते हुये वो हिन्दुत्व राष्ट्रवाद को उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद नहीं मानती बल्कि हिन्दुत्व को सर्वोपरि बनाने की एक जिद के रूप में देखती है कि हिन्दुत्व राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कोई हिस्सा नहीं लिया।[4] उन्हीं की कड़ी में आगे जुड़ते हुये इरफान हबीब कहते हैं (2016 में दि हिन्दू में) कि भारत माता की जय जैसे भाव का भारत के प्राचीन और मध्ययुगीन इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है। यह तो युरोपियन आयतित भाव है। यूरोप में fatherland और motherland के भाव मिलते हैं। इसीलिये भारत माता की जय का राष्ट्रवाद से कोई संबंध नहीं। भारत को एक मनुष्य के रूप में देखने का भाव हमारे किसी प्राचीन ग्रंथ में नहीं।[5]

लेकिन इनके संज्ञान में यह लाना आवश्यक है कि भूमि को मां के रूप में पूजन सर्वप्रथम हमारे ही धर्मग्रंथों में वर्णित है। कल को इरफान हबीब जैसे लोग यह भी कह सकते हैं कि भारत माता ही यूरोप से आयतित है। इरफान हबीब ही ऐसे इतिहासकार है जिन्होनें भगत सिंह को इतिहास में आतंकवादी सिद्ध करने के लिए एडी चोटी का जोर लगा दिया और ये भी स्थापित कर दिया कि भगत सिंह ने ही स्वयं को आतंकवादी बताया।[6] जो राष्ट्रवाद अपने कालपुरूषों का अपमान करता है। उनकी निन्दा करता है, वो राष्ट्र स्वयं ही नष्ट हो जाता है।

यह अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का दुरूप्रयोग है कि इन वामपंथियों इतिहासकारों, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों का जमावड़ा हमारे शिक्षा के मंदिरों में बढ़ता जा रहा है। इन्होंने ही हमारे पीढ़ी को हमारे इतिहास पुरूषों का तिरस्कार सिखाया। चंगेज, टीपू, औरंगजेब, बाबर जैसों को महान बनाकर प्रस्तुत किया और वो भारत में औरंगजेब मार्ग, बाबर मार्ग के नाम बदलने का विरोध करने लगे।[7]

''भारत तेरे टुकड़े होगें'' ये है असली वामपंथ का मकसद और चेहरा। इनकी संस्कृति और विचारधारा वर्गों के बीच संघर्ष पर आधारित है। द्वन्दात्मक भौतिकवादी भारत की समन्यवादी, समावेशी तन्त्र के पक्षधर कैसे हो सकते हैं। ये मानसिक दिवालियापन है कि इरफान हबीब RSS जैसे राष्ट्रवादी संगठन की तुलना IS से करते हैं और हम कुछ कह नहीं पाते क्योंकि ये उनकी अभिव्यक्ति की आजादी है। भारत तेरे टुकड़े होगें सुनकर भी वामपंथी कहते हैं कि ये असहमति का अधिकार है भारत को सुनना होगा।[8]

लेकिन मेरा मानना है कि आज यदि आप अफजल को नहीं मिटायेगें तो अफजल और उनके दस्ते आपको मिटा देगें। यदि आप खुशी से मिटना चाहे जो आप प्रगतिशील लिबरल, सेक्यूलर हैं अथवा प्रतिगामी, साम्प्रदायिक दक्षिणपंथी। ये वामपंथी और दक्षिणपंथी कुछ नहीं होता, हृदय के भाव हैं। यदि हृदय में देश के लिये प्रेम है तो मुंह से निकल ही नहीं सकता कि भारत तेरे टुकड़े होगें।

ये लोग क्या जाने के एकत्व क्या होता है? एकात्म का दर्शन क्या होता है? वामपंथियों की संस्कृति तोड़ने की है जोड़ने की नहीं। विश्व के परिदृश्यों से साम्यवाद का खत्मा केवल इसी तोड़ने की संस्कृति के कारण हुआ। स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता के फर्क को समझना होगा। स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता का खेल बंद करा देना यदि आक्रान्ता राष्ट्रवाद है तो मैं इसकी सर्मथक हूँ।

साहित्य रंगमंच, कला, पत्रकारिता या मीडिया शिक्षा, संस्थान बेधड़क होकर यदि अभिव्यक्ति की आड़ में भारत की एकता, अखंडता, सम्प्रभुता और संस्कृति को छिन्न भिन्न करने का प्रयास करते हैं तो उन्हें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही रोकेगा। ये भारत के लोगों को तय करना है कि हमें तोड़ने वालों की दलीलों से भारत के राष्ट्रवाद को समझना है या जोड़ने वालों की मानसिकता के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को।

रागेंय राघव का ये कथन भी ध्यान में रखना है कि रोटी की आजादी सिर्फ पेट भरना नहीं है। इंसान के दिमाग को हर जेलखाने से निकालना भी है पर यह जेलखाना वामपंथियों को नये–नये कुर्तक सिखाता है।[8] प्राइमटाइम पर रवीश कहते हैं कि टेगौर ने राष्ट्रवाद का विरोध किया है। राष्ट्रवाद को मानवता के लिये खतरा माना है। उन्होंने कहा था कि मैं मानवता के ऊपर देश प्रेम को महत्व नहीं दूंगा। परन्तु शायद वो अतिराष्ट्रवाद का विरोध करते हैं। जहां एक राष्ट्रवादी दूसरे देश को अपने अधीन करना चाहता है। राष्ट्र और राष्ट्रवाद दो ऐसे शब्द जिस पर अनेक व्याख्यायें एवं विचार इस समय सभी बुद्धिजीवियों की मानसिक विलासिता का केन्द्र बने हुये है।

संयुक्त राष्ट्र UNO द्वारा किसी भी राज्य को देश की मान्यता देने से राष्ट्र नहीं बनते। राष्ट्रवाद की यूरोपीयन अवधारणा में राष्ट्र सांस्कृतिक इकाईयाँ मात्र था। मजहब कहीं भी राष्ट्रीयता का आधार नहीं रहा परन्तु भारत को मजहब के नाम पर द्विसंस्कृति के नाम पर बाँटा गया।

भारतीय राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रवाद को परिभाषित करने में सबसे बड़ी कठिनाई यह गंगा जमुनी तहजीब या द्विराष्ट्रवादी सास्कृति जिसमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का तानाबाना छिन्न भिन्न कर दिया। दुनिया का कोई भी देश अपने देश की संस्कृति को मिश्रित संस्कृति नहीं कहता। भारत एक जन एवं एक संस्कृति है। यहां एक सांस्कृतिक राष्ट्र चिरकाल से विराजमान है। भारतीय संस्कृति मजहबों व उपासना पद्धतियों की बहुलता को न केवल स्वीकार करती है वरन् इस प्रवृत्ति को सम्मान देते हुये उसे संरभित रखने की व्यवस्था भी करती है। अगर भारत के राजनीतिज्ञ इस सत्य का साक्षात्कार करने से इंकार करेगें तो राष्ट्र की प्रभुसत्ता और अखण्डता संकट से पड़ सकती है। संकट में इसीलिये पड़ सकती हैं क्योंकि फिर वे समस्त तत्वहीन और श्रीहीन हो जायेंगे, जिन पर राष्ट्र का एकत्व आश्रित होता है। इसीलिये ये ध्यान में रखना होगा कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर भारत के नागरिक स्वच्छन्दता के पैरोकार न बन जाये और राष्ट्र के जीते जागते स्वरूप का वध न कर दें। अटल बिहारी वाजपेयी जी के शब्दों में यह राष्ट्र केवल एक भूमि का टुकड़ा नहीं है यह जीता जागता राष्ट्र पुरूष है। हिमालय इसका मस्तक है, गौरी शंकर शिखा है। कश्मीर इसका किरीट है। पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधें है। दिल्ली इसका हृदय है, नर्मदा करधनी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघाएं है। इसका सागर चरण धुलाता है।, मलयानिल विजन डुलाता है। सावन के काले काले मेघ इसकी कुन्तल केश राशि है। चांद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं। यह देवताओं की भूमि है। यह सन्यासियों की भूमि है। सह संतो की भूमि है, यह कृषि की भूमि है। यह सम्राटों की भूमि है, यह सेनानियों की भूमि है। यह तीर्थकरों की भूमि है। यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है, यह वन्दन की भूमि है, यह अभिनन्दन की भूमि है। इसका कंकर–कंकर शंकर है, असका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है। इसका कण–कण हमें प्यारा है इसका जन–जन हमारा दुलारा है। हम जियेंगे तो इसके लिये और यदि मृत्यु ने बुलाया तो मरेंगे भी इसके लिये। अगर मृत्यु के बाद हमारी हडडियां गंगाजी में फेंक दी गयी और कोई कान नगाकर सुने तो एक ही आवाज सुनायी देगी वन्दे मातरम्! वन्दे मातरम्।

मुददो पर बहस लोकतन्त्र की ताकत है। छात्रों में यह समझ विकसित होनी चाहिए कि वह सही मुददों के साथ स्पष्ट समझ रख सके। केवल अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश की एकता और अखंडता पर चोट पहुंचना निसन्देह उन की मंशा के प्रति सन्देह उठाना ही माना जायेगा। यह सही है कि विश्वविद्यालय एक तरह का सर्पोट सिस्टम है जो कैंपस के बाहर राजनीति में सहयोगी हो सकते है, पर राजनीति का पौधा असहमति और विरोध की गुजांइश की खाद के बीज ही से पनपनता है। व्यवस्था का विरोध मान्य है, राष्ट्र का नहीं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का अधिकार, मौलिक अधिकार से कहीं ज्यादा है। परन्तु अभिव्यक्ति की स्वच्छन्दता पर सीमाओं का पहरा है। संविधान ने हमारे बोलने, सोचने और किया की स्वतन्त्रता को लेकर अधिकारों को वर्णित किया है जो आगे यह सुनिश्चित करता है कि राज्य के सभी नागरिको को अधिकार की गांरटी चाहिये। परन्तु नागरिकों के कतर्व्य भी संविधान में उल्लेखित है जिस पर भी उतनी ही प्रमुखता से विर्मश आवश्यक है जितना अधिकारों पर भी।

संदर्भ

1. आउटलुंक 16 – 31 अगस्त 2015
2. 9 मार्च 2016, इण्डिया टुडे
3. 16 – 31 अगस्त 2015, पृष्ठ 32
4. पाउजजन्य 14 अगस्त 2016, पृष्ठ 60
5. पाउजजन्य 14 अगस्त 2016 पृष्ठ 16
6. तदैव
7. पाउजजन्य 14 अगस्त पृष्ठ 5
8. आउटलुक 16 – 31 अगस्त 2015
9. आउटलुक 29 अगस्त 2016